विभाग - A (गद्यविभाग)

* रिक्त स्थान (02)

(1) कठिन

(2) हैजा

* वाक्यांश चुनकर लिखिए (02)

(3) (ब) लोग उसमें दोष खोजने लगेंगे।

(4) (क) अपना गुड्डु और बहुत बड़ा दिखने लगा।

* एक-एक वाक्य में उत्तर (04)

(5) शेखर ने हरनाम को उपनाम 'छिपकली' नाम दिया था।

(6) लाड़ली थी

(7) वह कमजोरी धन और उसकी कठिनाई मानवीय संवेदना से भरी होती थी।

(8) उज्जयिनी (उज्जैन)

* दो-तीन वाक्यों में लिखिए (04)

(9) मोहन का घर आगरा में था। माँ-बाप के गुजर जाने के बाद बड़े भाई ने उसकी परवरिश की थी। बड़ा भाई वकील था और शराबी था। मोहन बी.ए. पास करने के बाद नौकरी खोज रहा था।

(10) लाला राम साहब के सामने नाचने के लिए बुही को बुलाया गया था। लेकिन खरी-खोटी सुनाकर बुही ने उसे इनकार दिया था।

(11) - यथा राजा तथा प्रजा' प्रसंग एकांकी इस कहावत को पूरी तरह चरितार्थ करता है

- दीवार गिरने के अपराध में कारीगर पर दोष मढ़ा जाता है
- उनमें कोतवाल दोषी साबित होता है,
- राजा उसे फाँसी देने का हुक्म देता है।
- कोतवाल की पतली गर्दन फाँसी के फंदे के लायक नहीं
- और बाद में गोवर्धन दास को पकड़ लाया गया

(12) मोहन बी.ए. पास एक सुशिक्षित युवक है।

- उसकी आकर्षक और अपनेपन से भरी बातें परायों को भी अपना बना लेती है -
- वह धन से अधिक आत्मीय संबंधों को महत्त्व देता है
- संकट में पड़ी एक लड़की को अपनाकर वह अपने साहस और मानवता का परिचय देता है
- अपने गुणों के कारण मोहन लेखक की नज़रों में बहुत ऊपर उठ जाता है

विभाग - B

13. भावना

14. संवेदना

(15) देशमंदिर, चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।
अभय-सुन्दर मंगल की नित्य हो आराधना।।
दुखियारों का दुःख जाना, है यही मनकामना।।
चेतना को पथ पाने जगाएँ संवेदना।।
दुर्बलों के रखवाली पौरुष की साधना।

(16) कवि सबके जीवन में नया प्रकाश भरने की प्रार्थना करते हैं।

(17) परोपकार के लिए है।

(18) आर्य हमेशा स्वार्थ से अधिक परोपकार को महत्व देते हैं।

(19) श्रीराम

(20) मनुष्य की आत्मा में स्वयं भगवान रहता है। इसलिए उसको प्राणों के आराम का वरदान मिला है।

(21) संत का हृदय पवित्र होता है। संत भगवान का ही रूप है। उसकी सेवा करने से जीवन में कल्याण अर्थात् भगवान प्राप्त होगा।

(22) बालक श्रीकृष्ण की मूर्ति बड़ी मनोहर है।
- वे अपने हाथों में मक्खन लिए घुटनों के बल चलते हैं।
- उनके मुँह में मक्खन लगा हुआ है।
- उनके गाल सुंदर और आँखें चंचल हैं।
- उनके माथे पर गोरोचन का तिलक लगा हुआ है।
- उनकी लटें मधुमस्त भौंरों जैसी सुंदर लग रही हैं।

(23) रहीमजी कहते हैं कि थोड़े समय के लिए आई विपत्ति भली होती है।
- विपत्ति के उस समय में हमें मालूम हो जाता है
- कौन हमारा हितकारी है और कौन हमारा अहित चाहता है।
- इस तरह थोड़े समय की विपदा हमें पीड़ा ज़रूर देती है पर वह हमें अपने सच्चे हितैषियों का ज्ञान करा देती है।

विभाग-C

(24) अप्रसन्न होना

(25) भयभीत हो जाना।

(26) गुणों के विरुद्ध नाम होना

(27) एक साधन से दो काम होना

(28) उसकी नाक कटती है।

(29) आलस्य नहीं करती।

(30) अतुल

(31) शोक

(32) अनुमोदन

(33) पुकार

(34) अविहितकारी

(35) निरभिमानी

36 उत्तराधिकारी

37, उप-ग्रह

38 अनाथ

39 स्वभाव

40 प्रतिकार

41 मेहनतकश

42 पुनरुक्ति

43 स्वच्छ

44 भय के बिना

45 रुचि के अनुसार

विभाग - D

46

47

48 पुस्तकका महत्व

49 रूखा-सूखा खाकर और ठंडा पानी पीकर संतोष मान लेते लेकिन दूसरे की घी में चुपड़ी हुई रोटी देखकर अपना मन ललचाता

(50) कंकड़-पत्थर जोड़कर मस्जिद बनाई और उसपर चढ़कर मुल्ला बांग देने लगा। कबीर पूछते है कि क्या खुदा बहरा हो गया है जो उसे इस तरह जोर से पुकारने की जरूरत पड़ती है।

51 [illegible]
निबंध
पत्र

(52) निबंध